

गुरुगोविंद सिंह



गुरुगोविंद सिंह का जन्म बिहार की राजधानी पटना में सन् 1666 में हुआ। पटना में ही माता गुजरी देवी ने उन्हें गुरुमुखी सिखाई। वे सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। उनका मूल नाम गोविंद राय था। 1699 ई० में आनंदपुर के केशवगढ़ नामक स्थान पर दयाराम, धर्मदास, मुहमचंद, साहिबचंद, हिम्मत इन पाँच सिखों को मृत्युंजयी बनाकर 'सिंह' बनाया और गोविंद राय से गोविंद सिंह बने। उनकी प्रतिभा शास्त्र से लेकर शस्त्र तक दिखलाई पड़ती है। बचपन में ही उन्होंने बिहार की अपनी भाषा के अलावा बाँग्ला भी सीख ली थी। वे गुरु तेगबहादुर के शिष्य थे और औरंगजेब के समकालीन। औरंगजेब की कट्टरता का उन्होंने पुरजोर विरोध किया। शक्ति संघटन के लिए उन्होंने हिमालय की पहाड़ियों को अपना निवास स्थान बनाया तथा बीस वर्षों की ऐकांतिक साधना की। इस ऐकांतिक साधना के अनेक शुभ परिणाम निकले। उन्होंने फारसी और संस्कृत के ऐतिहासिक-पौराणिक ग्रंथों का विशद अध्ययन किया। घुड़सवारी, तीरंदाजी में असाधारण निपुणता प्राप्त की, आखेट विद्या में दक्षता प्राप्त की और कठोर जीवन व्यतीत करने का अभ्यास किया। वे भलीभाँति समझ चुके थे कि औरंगजेब के विरुद्ध तबतक नहीं लड़ा जा सकता, जबतक औरंगजेब की कट्टरता का विरोध करने वाले को धार्मिक स्तर पर जागरूक न किया जाए। इसी उद्देश्य की सफलता के लिए उन्होंने 'खालसा पंथ' की स्थापना की, जो उनके जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। 1708 ई० में उनका देहांत हो गया।

गुरुगोविंद सिंह की प्रमुख कृतियाँ हैं – 'जापु साहिब', 'अकाल उसतति', 'विचित्र नाटक', 'चंडी चरित्र', 'ज्ञान प्रबोध', 'शास्त्रनाममाला', 'चौपाई'। 'जफरनामा' 1706 ई० में औरंगजेब को लिखा गया पत्र है जो खूब प्रसिद्ध हुआ। हिंदी कवियों द्वारा उन्होंने पंजाब में वीर रस के काव्य का प्रणयन कराया और स्वयं भी काव्य की रचना की। गुरुगोविंद सिंह की वाणी में शांत एवं वीर रस की प्रधानता है। परमात्मा की स्तुति में उन्होंने भक्ति, ज्ञान और वैराग्य को विषय बनाया तथा युद्धों के वर्णन में वीर और रौद्र रस को प्रधानता दी। उनकी कृतियों में उपमा, रूपक और दृष्टांत अलंकारों का बाहुल्य है। उनकी भाषा प्रधानतया पंजाबी मिश्रित ब्रज है, किंतु अरबी, फारसी और संस्कृत शब्दों के प्रयोग भी खूब हुए हैं। उनकी भाषा में सरिता का प्रवाह एवं निर्झर का कलकल निनाद है। उनकी समस्त वाणी में परमात्मा तथा देश की भक्ति के स्वर मुखरित हुए हैं।

प्रथम छंद में तमाम भेदों के पीछे मनुष्य की अंतर्वर्ती एकता की प्रतिष्ठा की गई है। समाज में ऊपरी विभेदों के भीतर आंतरिक एकता की अनुभूति तक इस पद की व्याप्ति है। कवि मानवमात्र की एकता का पक्षधर है। छंद के उत्तरार्ध में वह एकत्वपूर्ण आत्मबोध के कारण ईश्वर की एकता, गुरु, स्वरूप और ज्योति की एकता की प्रतिष्ठा करता है।

द्वितीय छंद में परमात्मा की विश्वरूप के स्वरूप में पहचान की गई है। यह अजर-अमर, व्यापक और बहुरूपी है। इसी विश्वरूपी परमात्मा से सबकुछ उत्पन्न हुआ है और इसी में लीन होगा।

(१)

कोऊ भयो मुंडिया संन्यासी, कोऊ जोगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जतियन मानबो ।
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी,
मानस की जात सबै एकै पहचानबो ।
करता करीम सोई राजक रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ।
एक ही सेव सबही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो ।

(२)

जैसे एक आग ते कनूका कोट आग उठे,
न्यारे न्यारे ह्वै कै फेरि आगमै मिलाहिंगे ।
जैसे एक धूरते अनेक धूर धूरत हैं,
धूरके कनूका फेर धूरही समाहिंगे ।
जैसे एक नदते तरंग कोट उपजत हैं,
पान के तरंग सब पानही कहाहिंगे ।
तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. ईश्वर ने मनुष्य को सर्वोत्तम कृति के रूप में रचा है। कवि के अनुसार मनुष्य वस्तुतः एक ही ईश्वर की संतान है, उसे खेमों में बाँटना उचित नहीं है। इस क्रम में उन्होंने किन उदाहरणों का प्रयोग किया है ?
2. कवि ने मानवीय संवेदना को मनुष्यता के किस डोर में बाँधे रखने की बात कही है ?
3. गुरुगोविंद सिंह के इन भक्ति पदों के माध्यम से सामाजिक कलह और भेदभाव को कम किया जा सकता है ? पठित पद से उदाहरण देकर समझाएँ।
4. भाव स्पष्ट करें –
(क) 'तैसे विस्वरूप ते अभूत भूत प्रगट होइ,
ताही ते उपज सबै ताही मैं समाहिंगे।'
(ख) 'एक ही सेव सबही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप सबै, एकै जोत जानबो।'

कविता के आस-पास

1. सिख धर्म के सभी गुरुओं का नाम क्रम से लिखें।
2. गुरुगोविंद सिंह का जन्म कहाँ हुआ था ? उनका बचपन कहाँ बीता ? उनके प्रारंभिक जीवन के बारे में एक लेख लिखें।
3. गुरुगोविंद सिंह सिखों के दसवें और अंतिम गुरु थे। उन्होंने सिखों के लिए पाँच ककार की प्रतिष्ठा की। उन पाँचों ककारों के नाम और महत्त्व अपने शिक्षक से पूछिए।
4. निराला की एक कविता है 'जागो फिर एक बार' जिसमें उन्होंने गुरुगोविंद सिंह का स्मरण किया है। इस कविता को अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर उसका पाठ करें।
5. गुरुगोविंद सिंह के जीवन-वृत्त से संबंधित तथ्य एकत्र कर उनके ऐतिहासिक महत्त्व पर विचार करें।
6. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने एक पुस्तक लिखी है 'सिख गुरुओं के पुण्य स्मरण'। यह पुस्तक अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें और सिख धर्म के प्रादुर्भाव पर एक निबंध लिखें।
7. अपने वर्ग के सहपाठियों के साथ पटना साहिब की यात्रा कीजिए और वहाँ हरमंदिर साहब के दर्शन कर एक रिपोर्टाज तैयार कीजिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें –
आग, संन्यासी, गुरु

2. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
एक, आग, भूत, प्रगट, उपज, संन्यासी
3. संन्यासी का संधि विच्छेद करें ।
4. दोनों पदों का आज की हिंदी में रूपांतरण कीजिए ।

शब्द निधि

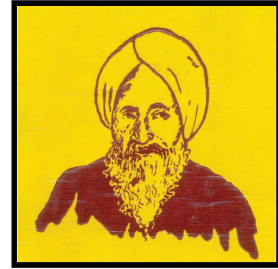
कोऊ	: कोई
मुंडिया	: मुंडित सिर
जतियन	: यति, योगी
तुरक	: तुर्क
राफजी	: वह व्यक्ति जो अपने स्वामी को पीड़ित देखकर भाग जाए
इमाम	: इस्लाम धर्म के पुरोहित, पुजारी
साफी	: शुद्ध करनेवाला
मानस	: मनुष्य
करीम	: कृपा करनेवाला, भगवान
सोई	: वही
राजक	: राजा, राज करनेवाला
रहीम	: जो दया करे
सेव	: सेव्य, जिसकी सेवा की जाए, सेवा करने योग्य
कनूका	: कण
कोट	: करोड़
ते	: से
न्यारे	: निराले, अलग
धूर	: धूलि
नदते	: नदी
पान	: पानी
कहाहिंगे	: कहे जाएँगे
अभूत	: जो भूत नहीं है





अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के आजमगढ़ जिले के निजामाबाद में सन् 1865 में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही चाचा बस्तसिंह के सान्निध्य में पाई। घर पर ही संस्कृत और फारसी का अध्ययन किया। उच्च शिक्षा के लिए क्वींस कॉलेज, वाराणसी में दाखिला लिया, किंतु अस्वस्थता के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर सके। उन्होंने कानून की भी पढ़ाई की और 1889 ई० में कानूनगो के पद पर नियुक्त भी हुए। लेकिन हरिऔध जी का मन पढ़ने-पढ़ाने में अधिक लगता था। इसलिए उन्होंने स्कूल में भी और विश्वविद्यालय में भी प्राध्यापन का कार्य किया। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में उन्होंने अवैतनिक प्राध्यापक के रूप में अपना योगदान दिया। सन् 1947 में हरिऔध जी चल बसे।



हरिऔध जी ने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं। उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं- 'प्रियप्रवास', 'चोखे चौपदे', 'वैदेही वनवास', 'चुभते चौपदे' आदि। उन्होंने 'प्रेमकांता', 'ठेठ हिंदी का ठाठ' और 'अधखिला फूल' नामक उपन्यास भी लिखे। 'प्रद्युम्न विजय' और 'रुक्मिणी परिणय' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। हरिऔध जी ने 'कबीर वचनावली' का संपादन भी किया जिसकी उपादेयता आज तक बनी हुई है। 'ठेठ हिंदी का ठाठ' आई० सी० एस० के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था।

खड़ी बोली को काव्यभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले कवियों में हरिऔध का नाम महत्वपूर्ण है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में साहित्य के क्षेत्र में आनेवाले हरिऔध आरंभ में नाटक तथा उपन्यास लेखन की ओर आकर्षित हुए, परंतु उनकी प्रतिभा का विकास वस्तुतः कवि के रूप में हुआ। हरिऔध को कवि के रूप में सर्वाधिक प्रसिद्धि उनके प्रबंधकाव्य 'प्रियप्रवास' के कारण मिली। इसी काव्यकृति के कारण उन्हें खड़ी बोली का प्रथम महाकवि होने का श्रेय मिला। खड़ी बोली को भलीभाँति प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने अपनी रचना में उसके कई रंग भरे। संस्कृत वर्ण-वृत्तों में नितांत तत्सम पदावली 'प्रियप्रवास' में प्रयुक्त की तो एकदम बोलचाल की खड़ी बोली अपने 'चौपदे' में।

प्रस्तुत कविता 'पलक पाँवड़े' में प्रकृति का व्यापक मनोहारी रूप प्रकट हुआ है। इस कविता में प्रकृति-सौंदर्य, प्रेम तथा स्वतंत्रता के भाव संश्लिष्ट रूप में व्यक्त हुए हैं।

पलक पाँवड़े

आज क्यों भोर है बहुत भाता ।
क्यों खिली आसमान की लाली ॥
किसलिए है निकल रहा सूरज ।
साथ रोली भरी लिए थाली ॥

इस तरह क्यों चहक उठीं चिड़ियाँ ।
सुन जिसे है बड़ी उमंग होती ॥
ओस आकर तमाम पत्तों पर ।
क्यों गई है बखेर यों मोती ॥

पेड़ क्यों हैं हरे-भरे इतने ।
किसलिए फूल हैं बहुत फूले ॥
इस तरह किसलिए खिलीं कलियाँ ।
भौर हैं किस उमंग में भूले ॥

क्यों हवा है सँभल-सँभल चलती ।
किसलिए है जहाँ-तहाँ थमती ॥
सब जगह एक-एक कोने में ।
क्यों महक है पसारती फिरती ॥

लाल नीले सफेद पत्तों में ।
भर गए फूल बेलि बहली क्यों ॥
झील तालाब और नदियों में ।
बिछ गई चादरें सुनहली क्यों ॥

किसलिए ठाट बाट है ऐसा ।
जी जिसे देखकर नहीं भरता ॥
किसलिए एक-एक थल सजकर ।
स्वर्ग की है बराबरी करता ॥

किसलिए है चहल-पहल ऐसी ।
किसलिए धूमधाम दिखलाई ॥
कौन-सी चाह आज दिन किसकी ।
आरती है उतारने आई ॥

देखते राह थक गई आँखें ।
क्या हुआ क्यों तुम्हें न पाते हैं ॥
आ अगर आज आ रहा है तू ।
हम पलक पाँवड़े बिछाते हैं ॥

अभ्यास

कविता के साथ

1. कवि को भोर क्यों भा रहा है ?
2. 'रोली भरी थाली' का क्या आशय है ?
3. कवि को प्रकृति में हो रहे परिवर्तन किस रूप में अर्थपूर्ण जान पड़ते हैं ?
4. हवा के कौन-कौन से कार्य-व्यापार कविता में बताए गए हैं ?
5. सुनहली चादरें कहाँ बिछी हुई हैं और क्यों ?
6. प्रकृति स्वर्ग की बराबरी कैसे करती है ?
7. कवि को ऐसा लगता है कि सभी प्राकृतिक व्यापारों के प्रकट होने के पीछे कोई गूढ़ अभिप्राय है । यह गूढ़ अभिप्राय क्या हो सकता है ? आप क्या सोचते हैं ? अपने विचार लिखें ।
8. यह कविता नवजागरण और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लिखी गई थी, नई चेतना और नया बिहान आने को था । इस कविता में उसकी कोई आहट है ? अगर हाँ तो किस रूप में ? स्पष्ट करें ।
9. कवि को किसकी उत्कण्ठित प्रतीक्षा है ? इसपर विचार कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. 'हरिऔध' द्विवेदी युग के एक प्रमुख कवि हैं ? द्विवेदी युग के कुछ अन्य प्रमुख कवियों की इससे मिलते-जुलते भावों की कविताएँ एकत्र करें और उनमें समानताएँ ढूँढ़ें ।
2. द्विवेदी युग के बाद छायावाद का उदय हुआ । इस कविता में छायावादी कविता के कौन-से लक्षण प्रकट होते दिखाई पड़ रहे हैं ? विचार कीजिए ।

3. सुमित्रानंदन पंत की कविता 'मौन निमंत्रण' उपलब्ध कीजिए और उसके साथ इस कविता पर तुलनात्मक विचार कीजिए ।
4. हरिऔध की प्रकृति पर लिखी कुछ अन्य कविताएँ एकत्र कीजिए और विद्यालय की गोष्ठी में उनका पाठ कीजिए ।

भाषा की बात

1. "आ अगर आज आ रहा है तू ।" अगर इस पंक्ति को हम यूँ कर दें - "आ अगर आज आ रहे हो तुम" तो अर्थ की दृष्टि से क्या परिवर्तन हो जाता है ? वह उचित है अथवा नहीं ।
2. कविता में प्रयुक्त शब्दयुग्म एकत्र करें और उनके स्वतंत्र वाक्य प्रयोग करें । जैसे - हरे-भरे, सँभल-सँभल, जहाँ-तहाँ आदि ।
3. कविता के अंतिम छंद में 'मैं' की जगह 'हम' सर्वनाम का प्रयोग क्यों है ?
4. निम्नांकित शब्दों के विपरीतार्थक रूप लिखें -
आसमान, दायँ, सुबह, स्वर्ग, दिन
5. निम्नांकित शब्दों के पर्यायवाची लिखें -
आकाश, चिड़िया, फूल, सूर्य, पेड़
6. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें -
भोर, सूरज, मोती, भूल, हवा, झील, तालाब, चाह, पलक ।

शब्द निधि

रोली	: तिलक करने के लिए पूजा में काम आनेवाली सामग्री
उमंग	: मस्ती, आनंद
बखेर	: बिखेरना
बेलि	: लता
बहली	: बहलना
पलक	: आँख की पलक
पाँवड़े	: स्वागतार्थ कुम-कुम इत्यादि बिखेरना
तमाम	: सभी

